साहित्योत्सव
Festival of Letters
28 जनवरी - 2 फ़रवरी 2019
भाषाएँ अनेक • देश एक

दैनिक समाचार बुलेटिन
शनिवार, 2 फ़रवरी 2019

परिचर्चा : नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य

जो कलाएँ हमें बृहत्तर नहीं बनातीं वे व्यर्थ हैं: रामगोपाल बजाज

साहित्योत्सव के अंतर्गत 1 फ़रवरी 2019 को 'नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य' विषयक परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात रंग-व्यक्तित्व रामगोपाल बजाज द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि जो भी कलाएँ हमें बृहत्तर नहीं बनातीं, वे व्यर्थ हैं। नाटक अपने में कई विधाओं को समेटे हुए है तथा उसका लेखन दलगत राजनीतिक आदि से ऊपर उठकर होना चाहिए, अन्यथा वह स्थायी नहीं रहेगा और जल्द ही परिदृश्य से ग़ायब हो जाएगा। उन्होंने नाटक को सरकारी नीतियों में शामिल करने के लिए आह्वान करते हुए कहा कि हम अपनी श्रेष्ठ नाट्य परंपरा तभी बचा पाएँगे।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वर्तमान अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने कहा कि नाटककार हमेशा वर्तमान को लेकर बातचीत करता है, लेकिन उसमें अतीत या भविष्य के ऐसे संकेत ज़रूर होते हैं, जिन्हें कोई भी निर्देशक पकड़ सकता है। उन्होंने कहा कि नाट्य निर्देशकों को भी साहित्य को एक शास्त्र के रूप में पढ़ना और समझना होगा, तभी वे उसके रूपांतरण और निर्देशन करते समय उसके साथ न्याय कर पाएँगे। केवल यह कहकर पल्ला नहीं झाड़ा जा सकता कि हिंदी में अच्छे नाटक नहीं हैं।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने युवा निर्देशकों द्वारा उपन्यास या कहानी का निर्देशन स्वयं करने पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह बहुत ग़लत प्रक्रिया है और इसे रोका जाना चाहिए। क्योंकि ऐसा करके वे अपनी प्रस्तुतियों को 'विज्युली' तो प्रभावी बना लेते हैं, लेकिन उसमें संवाद या नाट्य तथ्य ग़ायब हो जाते हैं। उन्होंने थियेटर को पीपुल के लिए तथा ड्रामा को राइटर से जोड़कर देखने की अपील की।

कार्यक्रम के संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात रंग आलोचक प्रयाग शुक्ल ने की, जिसमें आतमजीत, अजित राय, बलवंत ठाकुर, धर्मकीर्ति यशवंत सुमंत तथा एन. एहन्जाव मेतेई ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। एन. एहन्जाव मेतेई ने मणिपुरी भाषा में वर्तमान नाट्य लेखन के परिदृश्य का आकलन प्रस्तुत करते हुए संक्षेप में नाट्येतिहास की भी चर्चा की। धर्मकीर्ति यशवंत सुमंत ने सिनेमा और नाटक की तुलना करते हुए अपनी बात रखी। बलवंत ठाकुर ने नाटक और नाट्यकार की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि रंगमंच केवल लेखक या रंगकर्मी या निर्देशक की विधा नहीं है, इसे संपूर्णता में देखने-परखने की ज़रूरत है। अजित राय ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी पारंपरिक नाटकों को पसंद नहीं करती। नए नाटकों के अभाव पर बात करते हुए यह सवाल उठाया कि क्या नाट्यकार की मौत हो चुकी है। आतमजीत ने कहा कि यह कहना उचित नहीं है, क्योंकि नए नाटक बड़ी मात्रा में लिखे जा रहे हैं, यह अलग बात है कि निर्देशकों द्वारा उनकी रंगमंचीय प्रस्तुति नहीं की जा रही। प्रयाग शुक्ल यह सूचना दी कि 'रंग प्रसंग' के प्रत्येक अंक में उन्होंने नाटक को स्थान दिया था, जिनकी कुल संख्या 36 है। परिचर्चा के अंत में प्रबुद्ध श्रोताओं ने वक्ताओं से सवाल भी पूछे और अपनी टिप्पणियाँ भी कीं।

आज के कार्यक्रम

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी
साहित्य अकादेमी सभागार, अपराह्न 10.00 बजे

आओ कहानी बुनें : बच्चों के लिए विविध कार्यक्रम
साहित्य
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे

परिचर्चा : भारत में प्रकाशन की स्थिति
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन
रवींद्र भवन परिसर, सायं 2.30 बजे

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी

हमें नए सिरे से गाँधी को स्वीकार करना होगा : एस.एल. भैरप्पा

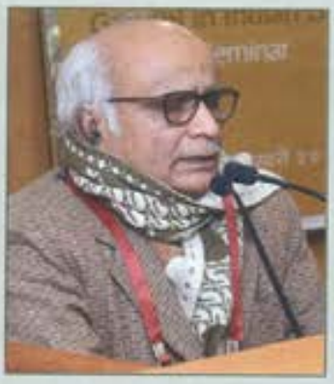
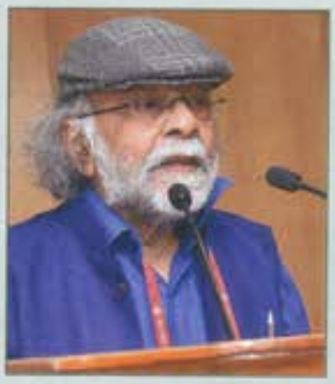

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'भारतीय साहित्य में गाँधी' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन आयोजित तृतीय सत्र 'गाँधी और भारतीय कथासाहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता करते हुए कन्नड के प्रतिष्ठित कथाकार एस. एल. भैरप्पा ने गाँधी जी की मातृभाषा में शिक्षा संबंधी अवधारणा पर बात की। उन्होंने गाँधी और टैगोर की शिक्षा संबंधी विचारों की तुलना की तथा नए सिरे से गाँधी को स्वीकारने की बात कही।

इस सत्र में श्रीभगवान सिंह ने 'उत्तर भारतीय कथासाहित्य में गाँधी' विषयक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि गाँधी ने समाज को सक्रिय करने, उनके प्रति सम्मान एवं अपनत्व का भावबोध उत्पन्न करने के प्रयास पर बल दिया। मालन वी. नारायण ने 'दक्षिण भारतीय कथासाहित्य में गाँधी' विषयक आलेख में मलयाळम्, कन्नड, तेलुगु, तमिळ भाषाओं के कथासाहित्य को संदर्भित करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रबोध पारिख ने 'पश्चिमी भारत के कथासाहित्य में गाँधी' विषयक आलेख प्रस्तुत करते हुए गाँधी की शिक्षा, भोजन, अर्थशास्त्र, सामुदायिक जीवन के प्रयोग आदि विषयों के उल्लेख पर चर्चा की। जयवंती डिमरी ने सतीनाथ भादुड़ी, वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों को केंद्र में रखकर उनमें चित्रित गाँधी की विचारधारा को संदर्भित किया।

'विश्व-दृष्टि में गाँधी' पर केंद्रित संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती साहित्यकार सितांशु यशश्चंद्र ने की, जिसमें चिन्मय गुह, सीमा शर्मा, जैसी जेम्स, सी.एन. श्रीनाथ ने अपने आलेख पढ़े। सितांशु यशश्चंद्र ने तत्कालीन समय में समय के साथ चलते हुए ज्वलंत समस्याओं के निराकरण की बात कही।

चिन्मय गुह ने रोमाँ रोलाँ की निर्भयता, समानता, राष्ट्रवाद के सिद्धांतों की बात कही। सीमा शर्मा ने यूरोपीय और अमेरिकी लेखकों की रचनाओं को संदर्भित करते हुए उन पर गाँधी के प्रभावों को रेखांकित किया। जैसी जेम्स ने एशियाई साहित्य में गाँधी के वैचारिक संदर्भों पर बात की। सी.एन. श्रीनाथ ने अंग्रेजी कथासाहित्य में गाँधी को संदर्भित करते हुए कहा कि गाँधी जी स्वयं भी बहुत ही अच्छे गद्यकार थे।

पंचम सत्र 'आत्मकथाओं में गाँधी' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कथाकार गिरिराज किशोर ने की। इस सत्र में उदयनारायण सिंह, बद्रीनारायण, जतिंद्र कुमार नायक तथा मधु सिंह ने अपने आलेख पढ़े। गिरिराज किशोर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गाँधी का जीवन ही उनका संदेश है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश को समर्पित किया। उनके सिद्धांत हमेशा प्रासंगिक रहेंगे।

बद्रीनारायण ने 'उत्तर भारतीय आत्मकथाओं में गाँधी' विषयक आलेख में उनके अनेक समकालीनों के रोचक प्रसंग सुनाए। जतिन्द्र नायक ने 'ओड़िया आत्मकथाओं में गाँधी' विषयक आलेख में यह बताया कि गाँधी जी विभिन्न स्थानों और व्यक्तियों से संपर्क साधने में सचेत थे। मधु सिंह ने मैडेलिन स्लेड

की आत्मकथा के विभिन्न संदर्भों को उद्धृत करते हुए अपनी बात रखी। उदयनारायण सिंह ने रवींद्रनाथ ठाकुर की जीवनियों में गाँधी के संदर्भों पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के षष्ठ सत्र 'गाँधी और भक्ति साहित्य' की अध्यक्षता हरीश त्रिवेदी ने की, जिसमें एस.आर. भट्ट तथा मोहम्मद आज़म ने अपने आलेख पढ़े। एस. आर. भट्ट ने श्रीमद्भगवद्गीता के संदर्भ में गाँधी के विचारों को उद्धृत करते हुए अपनी बात रखी। मोहम्मद आज़म ने 'गाँधी और बीसवीं सदी में भक्ति साहित्य का पुनरुत्थान' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। हरीश त्रिवेदी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गाँधी को संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं के भक्ति साहित्य का गहरा ज्ञान था। उनकी आस्था का विस्तार उपनिषद्, गीता, राम-कृष्ण और इस्लाम एवं ईसाई धर्मों तक था।

परिचर्चा : मीडिया और साहित्य

हमारी चेतना बनावटी है : चंद्रशेखर कंबार

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'मीडिया और साहित्य' विषयक परिचर्चा का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि मीडिया में साहित्य की जगह लगातार कम होती जा रही है, जो हमारी चिंता का विषय है। परिचर्चा के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने साहित्य और मीडिया के विभिन्न माध्यमों के साथ अपने कार्यानुभवों को साझा करते हुए कहा कि हमारी चेतना बनावटी है तथा तात्कालिक एवं उपभोक्तावादी छवियों से प्रभावित है, जो मीडिया द्वारा अभिव्यक्त हो रही है।

संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ लेखिका एवं पत्रकार वासंती ने की और ए. कृष्णाराव, अनंत विजय, अवनिजेश अवस्थी, मधुसूदन आनंद, रवींद्र त्रिपाठी एवं संजय कुंदन ने अपने विचार व्यक्त किए।

रवींद्र त्रिपाठी ने कहा कि अगर मैं लेखक या पत्रकार में से यह चुनाव करूँ कि किसको अभिव्यक्ति की ज़्यादा स्वतंत्रता है तो मेरा उत्तर लेखक होगा। क्योंकि पत्रकारों को विभिन्न अंकुशों के बीच काम करना होता है। आगे उन्होंने कहा कि प्रिंट पत्रकारिता में ज़रूर साहित्य का स्थान कम हुआ है, लेकिन उसके स्थान पर सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों में हम साहित्य को विभिन्न रूपों में देख सकते हैं।

ए. कृष्णराव ने तेलुगु मीडिया और साहित्य को संदर्भित करते हुए मीडिया पर साहित्य के प्रभाव पर बात की। उन्होंने कहा कि मीडिया अब कॉरपोरेट के हाथों का खिलौना बन गया है। वर्तमान समय में पत्रकारिता साहित्य से कोई प्रेरणा या प्रभाव नहीं ग्रहण कर रही।

वरिष्ठ पत्रकार मधुसूदन आनंद ने कहा कि हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का जो शुरुआती इतिहास है, उसमें पत्रकारिता और साहित्य के बीच कोई अलगाव नहीं था। अच्छे लेखक ही पत्रकार थे या कहे अच्छे पत्रकार ही लेखक थे। लेकिन उन्होंने आगे यह प्रश्न भी उठाया कि क्या हमारे पास साहित्य के पाठक हैं। अगर साहित्य के पाठक होते तो मीडिया पर उसको प्रकाशित/प्रसारित करने का दबाव ज़रूरी होता। उन्होंने इस दूरी को पाटने के लिए पुस्तक संस्कृति की ज़रूरत पर बल दिया।

अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि मीडिया बाज़ार के दबाव में है और उसे साहित्य और संस्कृति विषयों में बहुत ज़्यादा रुचि नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि एक समय साहित्य समाज के आगे चलता था, लेकिन अब वह उसके पीछे चल रहा है। ये परिस्थितियाँ बदलनी होंगीं, तभी साहित्य मशाल का काम कर पाएगा और उसे तभी अन्य माध्यमों में अपेक्षित स्थान मिल पाएगा।

अनंत विजय ने आज के साहित्य पर ही सवाल उठाते हुए कहा कि आजकल जो कहानियाँ और कविताएँ लिखी जा रही है, क्या वो सच में साहित्य के दायरे में आती हैं। उन्होंने कहा कि जब घटिया साहित्य लिखा जाएगा तो उसे छापेगा कौन? उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अब छपने के लिए ही नहीं, बल्कि सिनेमा और टेलीविज़न के द्वारा भी लिखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमें यह विलाप बंद करके कि साहित्य छापा नहीं जा रहा, के स्थान पर अच्छा लेखन कर उसे प्रकाशन के लिए विवश करना होगा।

अंतिम वक्ता संजय कुंदन ने कहा कि आजकल हर अख़बार ब्रांडिंग के दबाव में या कहें बाज़ार के दबाव में अपना 'कंटेंट' चुन रहा है और वह यह भी जान रहा है कि साहित्य में भी ब्रांड बनने का माद्दा है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता बाज़ार के साथ हो सकती है, लेकिन साहित्य बाज़ार का हमेशा विरोध करेगा।

सत्र की अध्यक्षता कर रही वासंती ने कहा कि मीडिया और साहित्य का रिश्ता एक-दूसरे के लिए पूरक का काम कर सकता है, अतः हमें दोनों के बीच कुछ ज़रूरी और समाज को संदेश देनेवाले तथ्यों में एकरूपता लानी होगी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

आज सायं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत 'इंडो-फ्यूज़न संगीत', सुनीता भुयाँ एवं समूह द्वारा प्रस्तुत किया। सुनीता भुयाँ ने वायलिन पर कई लोकप्रिय धुनों के साथ-साथ गायन भी प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in